International Journal of Education and Science Research Review
E-ISSN 2348-6457
July –August - 2021, Volume-8, Issue-4
P-ISSN 2349-1817
www.ijesrr.org
Email- editor@ijesrr.org

हिन्दी पत्रकारिता का अर्थ और उसके विविध रूपों का संक्षिप्त विश्लेषण

डॉ अरविंदकुमार दीक्षित
प्राचार्य
श्री रामनारायण दीक्षित स्नातकोत्तर महाविद्यालय श्री विजयनगर
जिला श्रीगंगानगर (राजस्थान)

सार–

स्वतन्त्रता से पूर्व राजस्थान के पत्रों के सामने हिन्दी पत्रकारिता के आदर्श पत्रों का अभाव था। उनके सामने ऐसा कोई पत्र नहीं था, जिसका अनुसरण करके वे समाचार पत्रों के प्रकाशन का आरम्भ करते। सन् 1900 के आस–पास जब हिन्दी प्रदेशों में अच्छे पत्र निकलने लगे तो उनका प्रभाव राजस्थान पर भी पड़ा और तभी यहाँ कुछ अपवादों को छोड़कर सामाजिक एवं राजनीतिक चेतनामूलक पत्र निकलने लगे। राजस्थान में पत्रकारिता के प्रादुर्भाव में होने वाले विलम्ब के इन कारणों के होते हुए भी यह कहना उपयुक्त होगा कि भले ही राजस्थान में पत्रकारिता का श्रीगणेश विलम्ब से हुआ और भले ही यहाँ के पत्र दीर्घजीवी नहीं हो सके, तथापि राजस्थान जैसे पिछड़े हुए प्रदेश में इन पत्रों ने लोकजागरण का जो अलख जगाया, वह ऐतिहासिक महत्व का है। इन पत्रों ने न केवल सामाजिक एवं धार्मिक सुधारों के आन्दोलनों को स्वर दिया, अपितु, स्वतंत्रता संग्राम के लिए किए गए विभिन्न जन–आंदोलनों को भी अपना समर्थन दिया।

पत्रकारिता का अर्थ–

किसी विचार या संदेश को अधिंकाशतः एवं सुदूर व्यक्तियों (जन–जन) तक किसी माध्यम के द्वारा प्रसारित करना ही पत्रकारिता है। समय और समाज के संदर्भ में सजग रहकर नागरिकों में दायित्व–बोध पैदा कराना व समाज में घटित घटनाओं व उनसे सम्बन्धित विचारों से नागरिकों को अवगत कराने की कला ही पत्रकारिता है। आधुनिक समय में पत्रकारिता भ्रष्टाचार रूपी तंत्र के लिए ब्रह्मास्त्र का स्वरूप धारण किये हुए है। पत्रकारिता को विभिन्न विद्वानों द्वारा परिभाषित किया गया है जो निम्नलिखित है –''पत्रकारिता के लिए अंग्रेजी में जर्नलिज्म शब्द प्रयोग में लाया जाता है जो जर्नल से निकला है जिसका शाब्दिक अर्थ 'दैनिक' है। दिन–प्रतिदिन के क्रिया–कलापों, सरकारी बैठकों का विवरण 'जर्नल' में रहता है। 17वीं एवं 18वीं सदी में पीरियाडिकल के स्थान पर लैटिन शब्द 'डियूरनल' और 'जर्नल' शब्दों का प्रयोग हुए। जर्नल से बना जर्नलिज्म अपेक्षाकृत व्यापक शब्द है। समाचार पत्रों एवं विधिक कालिक पत्रिकाओं के सम्पादन एवं लेखन और तत्सम्बन्धी कार्यों को पत्रकारिता के अन्तर्गत ही रखा जाता है। इस प्रकार समाचारों का संकलन, प्रसारण, विज्ञापन की कला एवं पत्र का व्यावसायिक संगठन पत्रकारिता है।''

जर्नलिज्म से पहले पत्रकारिता का शाब्दिक अर्थ – संस्कृत के शब्द 'पत्र' से इसे गृहीत माना जा सकता है। इसमें 'कृ' धातु में णिनि + तल + टाप प्रत्ययों के योग से पत्रकारिता शब्द बनता है। पत्र के साथ ही 'पत्रिका' शब्द का प्रयोग भी प्रचलन में है। ''जर्नलिज्म फ्रैंच शब्द जर्नी से व्युत्पन्न है, जिसका अर्थ होता है, एक–एक दिवस का कार्य या उसकी विवरणिका प्रस्तुत करना।[2] चैम्बर और न्यू वेब्स्टर्स डिक्शनरी के अनुरूप प्रकाशन,

सम्पादन, लेखन एवं प्रसारणयुक्त समाचार माध्यम का व्यवसाय ही पत्रकारिता है।[3] ''पत्रकारिता अभिव्यक्ति की एक मनोरम कला है। इसका कार्य जनता तथा जन–नेताओं के समक्ष लोक–कल्याण सम्बन्धी कार्यों की सूची प्रस्तुत करना है।''

पत्रकारिता मानव चेतना, भाषा और सच्चे बयान की सम्मिलित संतुलित प्रस्तुति है। सच्चाई+चेतना+भाषा+विधिवत संप्रेषण = पत्रकारिता। सच्चाई या सच्चाई बयान करने के साहस के बिना पत्रकारिता असंभव है। चेतना के बिना पत्रकारिता का जन्म नहीं हो सकता। भाषा न हो, तो पत्रकारिता कार्य–व्यापार अकल्पनीय है। विधिवत संप्रेषण की कोई विधि न हो, तो पत्रकारिता को अंजाम नहीं दिया जा सकता। भारत के पूर्व राष्ट्रपति डॉ. शंकरदयाल शर्मा– पत्रकारिता कोई पेशा नहीं, यह जन–सेवा का माध्यम है। लोकतांत्रिक परम्पराओं की रक्षा करने, शांति और भाईचारे की भावना बढ़ाने में इसकी भूमिका है।''

डॉ. सुषीला जोशी–''पौराणिक युग में जो स्थान और महत्व नारद मुनि का था, वही स्थान आज के युग में समाचार पत्र का है। उस समय नारद ही आकाश–पाताल की खबरें देवताओं को दिया करते थे, आज के वहीं काम समाचार पत्र मनुष्यों के बीच करते है। समाचार पत्र युग की ऊष्मा नापने का थर्मामीटर है तो वातावरण की सघनता–विरलता को अंकित करने का बैरीमीटर भी है क्योंकि समाज परिवेश का सामाजिक तापमान इसी से जाना जाता है और वह कभी सतह पर और कभी गहराई में उतरकर अपने प्रयत्न से सिद्ध फल को सामने ले आता है और समाज को मुक्त जीवन सरिता के साथ प्रवाहित होता है। इस प्रकार समाचार पत्र अतीत के साथ–साथ वर्तमान की सूचना देता हुआ भविष्य की संभावना प्रकट करता है। कहा जा सकता है कि पत्रकारिता एक प्रकार से सूचना देने वाला 'मौसम पक्षी' होता है।

पत्रकारिता के विविध रूप

वर्तमान समय में पत्रकारिता केवल समाचार पत्र–पत्रिकाओं तक ही सिमटी हुई नहीं है अपितु यह जन संचार के अन्य माध्यमों यथा दूरदर्शन, फिल्म, आकाशवाणी आदि क्षेत्रों तक इसका विस्तार हो चुका है। आज पत्रकारिता के माध्यम से हम न केवल राष्ट्रीय चेतना जगाने का कार्य कर रहे है जो कि किसी समय (स्वतंत्रता से पहले) पत्रकारिता की एकमात्र शपथ हुआ करती थी बल्कि आज पत्रकारिता के माध्यम से देश की विभिन्न समस्याओं, विभिन्न योजनाओं, राजनीतिक समीकरणों, आर्थिक क्षेत्र से सम्बन्धित विचारों यथा विकास दर व साझा बाजार आदि का भी ध्यान पत्रकारिता द्वारा रखा जा रहा है। आज शायद ही कोई ऐसा क्षेत्र होगा जो कि पत्रकारिता से बच पया हो अन्यथा हम पत्रकारिता के माध्यम से देश की सामाजिक, राजनीतिक, आर्थिक, धार्मिक स्थिति का विश्लेषण तो करते ही है इसके अलावा विज्ञान का क्षेत्र, खेल का क्षेत्र, सूचना प्रौद्योगिकी का क्षेत्र व फिल्मी क्षेत्र (सिनेमा), ग्रामीण क्षेत्र आदि सभी पर पत्रकारिता की नजर हमेश जमी रहती है। इसी वजह से पत्रकारिता जनता में सामाजिक चेतना, राष्ट्रीय चेतना, धार्मिक चेतना, साहित्यिक व सांस्कृतिक चेतना, सूचना प्रौद्योगिकी की चेतना उत्पन्न करती है।

हम भारतीय लोग अभी तक प्रायः एक बहुत ही सीमित दायरे तक सोचा करते थे। जिसमें भारत का एक बहुत बड़ा वर्ग (मध्यम वर्ग) कुछ अधिक ही सीमित था। उसे अपने अलावा और किसी से कोई लेना देना नहीं था। इसलिए वह चेतना शब्द से ही दूर रहता था। परन्तु आज के संदर्भ में पत्रकारिता के माध्यम से उसने अपने आपको सारे क्षेत्रों से जोड़ा और देश के विकास में सम्पूर्ण क्षेत्रों में अपनी विचारात्मक भागीदारी निभायी जिसकी वजह से हमारा देश आज विश्व पटल पर एक नयी शक्ति के रूप में उभरकर सबके सामने आया है, क्योंकि देश की निर्माणकारी प्रक्रिया में इस वर्ग ने जो कि पत्रकारिता के द्वारा चेतना जागृत करने पर उठ खड़ा हुआ या जागरूक हो गया है। उसने पत्रकारिता द्वारा महती भूमिका का निर्धारण किया है।

1. साहित्यिक–सांस्कृतिक पत्रकारिता–हालांकि साहित्य का अकेला क्षत्रे ही बहुत बड़ा है जिसमें भाषा, भाषा संबंधी विचार, काव्य, कथा, निबंध, नाटक आदि के विविध वर्ग उन पर चल रहे विचार–विमर्श, बहस, गोष्ठियाँ, सेमिनार आदि पुस्तक समीक्षा, साहित्यिक वाद–विवादों, लेखकों के शिविर, यात्राएँ, भ्रमण, रिपोर्ताज, पुरस्कार, साहित्य अकादमियां एवं लेखकीय संगठन आदि अनेक क्रियाशीलताएँ साहित्यिक पत्रकारिता का विषय हैं फिर सारं कृतिक क्षेत्र तो और भी बड़ा है जिसमें रंगकर्म, चित्रकला, मूर्तिकला, संगीत, नृत्य तथा क्रीड़ा, फिल्म, मनोरंजन आदि के विपुल रूप सांस्कृतिक गतिविधि के अंग है। उनके बारे में पाठक को रोचक और सार–सूचक जानकारी देना सांस्कृतिक पत्रकारिता का लक्ष्य है। साहित्यिक– सांस्कृतिक पत्रकारिता कतिपय विशिष्ट संस्कारों, अभिरूचियों और झुकाव की अपेक्षा रखती है। धार्मिक एवं जातिगत रीति–रिवाजों, खान–पान, रहन–सहन, वस्त्र विन्यास, रूप सज्जा, आवास–निवास, वस्तु प्रतिभाएँ आदि को लेकर उभरने वाली नयी–नयी प्रवृत्तियाँ और पुराने रूपों की स्मृति और परम्परा भी सांस्कृतिक पत्रकारिता का अवयव है।

भारत में साहित्यिक–सांस्कृतिक पत्रकारिता का प्रारंभ उन्नीसवीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध से हुआ। हिन्दी में भी तभी से इसका प्रारंभ हुआ। प्रारम्भ में साहित्यिक–सांस्कृतिक पत्रकारिता में समाज–सुधार की भावना पर अत्यधिक बल था। ब्रह्म समाजियों ने सर्वप्रथम भारतीय समाज के लिए यह कार्य किया तथा बंगदूत, 'इंडियन मिरर' आदि इसके उदाहरण है। कलकत्ता की तत्वबोधिनी पत्रिका प्रमुख थी। इसी श्रेणी में पूना से सुबोध पत्रिका निकली फिर मुम्बई से टाइम्स ऑफ इंडिया, कलकत्ता से स्टेट्समैन, इलाहाबाद से पायोनियर, पटना से इंडियन नेशन और आर्यावर्त, पुणे से केसरी और मराठा, मद्रास से स्वदेश मित्रम् और हिन्दू, बनारस से भारतेन्दु हरिश्चन्द्र की चन्द्रिका तथा काशी पत्रिका लेकिन हिन्दी में साहित्यिक–सांस्कृतिक पत्रकारिता के संस्थापकों में सबसे प्रमुख है–'भारतेन्दु हरिश्चन्द्र।' साहित्यिक पत्रकारिता के क्षेत्र में 'सरस्वती' मासिक पत्रिका सन् 1900 में निकली। सन् 1901 में जयपुर से 'समालोचक' निकला। सरस्वती के संपादक महावीर प्रसाद द्विवेदी सन् 1903 से सन् 1932 तक रहे और 'समालोचक' के पहले संपादक चन्द्रधर शर्मा 'गुलेरी' हुए थे।

सन् 1907 में मदनमोहन मालवीय जी ने बनारस से साप्तहिक 'अभ्युदय' निकला। सन् 1909 में सुन्दर लाल जी ने प्रयाग से कर्मयोगी पाक्षिक निकाला। इसी वर्ष लाहौर से चांद निकाला। सन् 1910 में कानपुर से गणेश शंकर विद्यार्थी द्वारा 'प्रताप साप्ताहिक' निकाला गया। सन् 1911 में मासिक 'मर्यादा' का प्रकाशन काशी से

हुआ। उसी वर्ष कलकत्ता से 'सनातन धर्म' मासिक तथा ज्वालापुर, हरिद्वार से 'भारतोदय' मासिक निकले। सन् 1913 में खंडवा से मासिक 'प्रभा' (माखनलाल चतुर्वेदी) तथा 'काशी' से मासिक 'नवनीत' (स. लक्ष्मण नारायण गर्दे) निकला। सन् 1915 में प्रयोग से मासिक 'विज्ञान' (स. श्रीधर पाठक) तथा जबलपुर से मासिक 'शारदा विनोद' (सं. नर्मदा मिश्र) प्रकाशित हुए। सन् 1918 में नागपुर से 'संकल्प' (सं.डॉ. मुंजे) साप्ताहिक निकला। इस प्रकार पहले पचास वर्ष में साहित्यिक–सांस्कृतिक पत्रकारिता बहुत फली– फूली।

यद्यपि साहित्यिक–सांस्कृतिक पत्रकारिता का प्रारंभ भारत में अग्रेजीराज की सुधार योजनाओं को सफल बनाने में सहायता के लिए हुआ था, तथापि शीघ्र ही वह भारतीय स्वाधीनता संग्राम का अंग बन गई। तिलक, मालवीय, बाबूराव पराडकर, रामानंद चट्टोपाध्याय, गणेश शंकर विद्यार्थी, माधवराव सप्रे, लक्ष्मण नारायण गर्दे, काशीप्रसाद जायसवाल, माखन लाल चतुर्वेदी, पदमसिंह शर्मा आदि प्रतिभाशाली पत्रकारों ने पत्रकारिता, राजनीति, धर्म, कर्तव्य, संस्कृति समेत सम्पूर्ण जीवन की अखण्डता को पत्रकारिता में भी साकार कर दिया।

2. विज्ञान पत्रकारिता :– आज का युग विज्ञान एवं तकनीकी का युग है। विज्ञान पत्रकारिता एक ऐसी कड़ी है जो जन–जन को आकर्षित करती हुई मानव को विज्ञान से जोड़ देती है। तकनीकी, मानव द्वारा चन्द्रमा पर अवतरण, मानव–रहित अन्तरिक्ष यानों की सफलता, ऊर्जा के साधन, पोषण, स्वास्थ्य, शिक्षा, परिवहन, मकान, वातावरण की रक्षा, कृषि आदि सभी विषय विज्ञान से सम्बन्धित है। विज्ञान से जुड़े समाचार, विचार का संकलन, संयोजन, लेखन, सम्पादन व प्रस्तुतीकरण विज्ञान पत्रकारिता है।

हालांकि हिन्दी पत्रकारिता में विज्ञान पत्रकारिता की स्थिति बहुत ही दयनीय थी क्योंकि सर्वप्रथम उसके लिए वैज्ञानिक शब्दावली की आवश्यकता थी। अतः इसके लिए सन् 1898 में बाबू श्याम सुन्दर दास बी.ए. की अध्यक्षता में काशी नागरी प्रचारिणी सभी ने एक समिति बनाई और सन् 1906 में कई वैज्ञानिक पत्रिका 'विज्ञान' आयी। जिसका प्रकाशन अप्रैल सन् 1915 में प्रयाग (इलाहाबाद) की विज्ञान परिषद ने शुरू किया।
'विज्ञान' के प्रथम वर्ष के अंकों में अनेक प्रकार की शैलियाँ अपनाई गई। हर अंक की शुरूआत विज्ञानमय मंगलाचरण से की जाती है। जुलाई सन् 1915 के 'विज्ञान' का यह मंगलाचरण दृष्टव्य है –

''रेल, तार, बेतार, एक्सरे, रश्मि, रेडियम,
फोटो, फोनो, अनुवीक्षण, द्रुत–अनुलेखन क्रम
जल–थल–नभ–पथ सुलभ सरल सर्वत्र समागम
मोटर बायस्कोप, यंत्र–समुदाय अनुपम
यह जिसका अनुसंधान–फल अथवा आविष्कार है
उस पश्चिमीय विज्ञान का स्वागत सौ–सौ बार है।''

'विज्ञान' के सम्पादकद्वय थे – लाला सीताराम और पंडित श्रीधर पाठक। रोचक शैली वाले विज्ञान लेखकों में प्रो. भगवती प्रसाद श्रीवास्तव और डॉ. सत्यप्रकाश जी थे। प्रो. श्रीवास्तव का पहला वैज्ञानिक लेख कलकत्ता के 'विशाल भारत' में छपा था जिसका शीर्षक था 'विज्ञान और धर्म'। उनके ही सुझाव पर सन् 1938 में बनारस

के 'साप्ताहिक आज' में विज्ञान जगत 'स्तम्भ' शुरू किया। सन् 1940 में ज्ञानमण्डल वाराणासी से उनकी वैज्ञानिक रचनाओं का संकलन 'विज्ञान के चमत्कार' नाम से प्रकाशित हुई। डॉ. सत्यप्रकाश जी ने हिन्दी साहित्य सम्मेलन के जयपुर अधिवेशन में सन् 1944 में हिन्दी में त्रेमासिक अनुसंधान पत्रिका प्रकाशित करने की इच्छा प्रकट की थी। जो कि उत्तर प्रदेश की वैज्ञानिक अनुसंधान परिषद् से आर्थिक सहायता मिलने पर जनवरी सन् 1958 में पूरी हो पाई।

3. धार्मिक एवं आध्यात्मिक पत्रकारिता–भारतीय संविधान को धर्मनिरपेक्ष माना गया है तथा सभी को किसी भी धर्म को मानने की स्वतंत्रता है। प्रारंभ से ही मानव के लिए धर्म एवं अध्यात्म का सर्वोपरि स्थान रहा है। यही कारण रहा कि धर्म एवं अध्यात्म से सम्बन्धित पत्रिकाओं का शुरूआत से ही बोल–बोला रहा।

'उदंत मार्तण्ड' हिन्दी का पहला समाचार पत्र था जो कि सन् 1826 में कलकत्ता में श्री युगल किशोर चतुर्वेदी के संपादन में प्रकाशित हुआ। इस पत्र में धर्म सम्बन्धी सामग्री की प्रचुरता थी। सन् 1954 में प्रकाशित 'समाचार सुधावर्षण' ने उस समय में विवादित 'विधवा विवाह' शास्त्रोक्त है अथवा शास्त्र विरोधी विषय पर लेखामाला प्रकाशित की थी। सन् 1898 में कलकत्ता से प्रकाशित 'भारत–मित्र' वैदिक धर्म का संदेश वाहक था। सन् 1882 में काशी से 'वैष्णव पत्रिका' का संपादन सनातनधर्मी विद्वान पं. अम्बिकादत्त वाजपेयी ने किया था। सन् 1889 में 'सार सुधानिधि' का कलकत्ता से प्रकाशन हुआ। यह पत्र भी सनातन धर्मी विचारधारा का पोषक था, जिसके संपादक पं. सदानन्द मिश्र जी थे। इसके विचार प्रमुखतः गोहत्या के विरूद्ध आर्य समाज द्वारा मूर्ति पूजा तथा अवतारवाद का विरोध किये जाने की भी आलोचना से सम्बन्धित थे। यह पत्र ब्रिटिश सरकार को धर्म विरोधी विदेशी सरकार लिखने के कारण चर्चा में रहा।

4. खेल पत्रकारिता – एक नागरिक के स्वास्थ्य में खेलों का महत्वपूर्ण स्थान है। खेलकूद का आनन्द लेना और खेल–समारोहों का आयोजन करना मानव संस्कृति एवं सभ्यता का अभिन्न अंग रहा है। आधुनिक समय में तो खेल के प्रति युवा जोश देखते ही बनता है। जैसा खिलाड़ी का स्टाइल (अदा) वैसे ही अपने ऊपर उसे आजमा कर देखते हैं। यह सब मीडिया का कमाल है, जो कि पत्रकारिता का ही एक अंग है। आज युवाओं में केवल फिल्मी अभिनेताओं का ही स्टारडम नहीं दिखता बल्कि वह फुटबॉल, क्रिकेट, बैडमिंटन, हॉकी व शूटिंग आदि खेलों के खिलाडियों की स्टारडम की भी समक्ष रखते हैं। उनके बारे में जानने की इच्छा (जिज्ञासा) कि वो क्या पहनते है? कैसे रहते है? क्या खाते है? आदि प्रश्नों को केवल पत्रकारिता के माध्यम से ही सुलझाकर युवाओं के सामने लाते है। खेल पत्रकारिता के माध्यम से उन खिलाड़ियों व उनके खेल से सम्बन्धित समाचार व उनका जीवन परिचय आदि सब कुछ हमें पता चलता है। आज इसी वजह से पत्र–पत्रिकाओं में हम खेलों से सम्बन्धित सामग्री नियमित रूप से देख पाते है।

हालांकि विदेशों और भारत की खेल–पत्रिकारिता में काफी अंतर है क्योंकि भारत में तो अधिकांशतया एक ही संवाददाता सम्पूर्ण खेल पृष्ठ को कवर करता है, जबकि विदेशों में हर खेल के लिए अलग संवाददाता होता

है। यही कारण है कि म्यूनिख में सम्पन्न हुए ओलम्पिक खेलों में केवल एथलेटिक्स को कवर करने हेतु पाँच संवाददाता अमेरिका से पहुँच गये थे।

देश में हिन्दी के समाचार पत्रों में सर्वप्रथम खेल का स्तम्भ 'नवभारत टाइम्स' में अक्षयजी ने शुरू किया। सन् 1951 में नयी दिल्ली में हुई एशियाई खेलों की समीक्षा को कुछ समाचार–पत्रों ने विस्तार से स्थान दिया, पर सही मायने में सन् 1960 में इसकी विधिवत् शुरूआत हुई। अतः सन् 1960 से ही खेल पत्रकारिता की शुरूआत मानी जाती है। आज शायद ही कोई ऐसा दैनिक, साप्ताहिक, मासिक होगा जो खेलकूद से सम्बन्धित सामग्री न देता हो, राजस्थान से प्रकाशित होने वाले राष्ट्रदूत, दैनिक नवज्योति, भास्कर, राजस्थान पत्रिका, इंदौर की नई दुनिया, दिल्ली से हिन्दुस्तान, उत्तर प्रदेश से 'आज', 'स्वतंत्र भारत', दैनिक जागरण आदि सभी में खेल समाचारों को अलग से स्थान दिया जाता है। खेल पत्रकारिता के प्रमुख खेल लेखकों में सर्वश्री सुशील जैन, आनन्द दीक्षित, शिवशंकर सिंह, केशव झा, अजमत हाशमी, सुरेश गावडे, अशोक कुमार, अजय मुखर्जी जैसे प्रसिद्ध लेखकों का नाम लिया जा सकता है। हिन्दी में खेल पत्रकारिता की उच्च–स्तरीय पत्रिका आज भी नहीं मिलती हैं। फिर भी हिन्दी में प्रतिष्ठित साप्ताहिक 'धर्मयुग', साप्ताहिक 'हिन्दुस्तान', 'दिनमान' ने भी अनेक खेल विशेषांक निकाले। जैसे ओलम्पिक विशेषांक, क्रिकेट विशेषांक, एशियाई खेल विशेषांक। इनमें स्थायी स्तम्भ भी आते है। 'रविवार' (कोलकत्ता), 'अवकाश' (वाराणसी) आदि पत्रिकाओं ने भी खेल स्तम्भ शुरू कर रखे है। इनमें हरिमोहन शर्मा, प्रमोदशंकर भट्ट, योगराज थानी, देवेन्द्र भारद्वाज, अजय कुमार भूषण, सरहिन्दी, मनोहर श्याम जोशी, प्रशान्त कुमार, सुशील कुमार दोषी, नरोत्तम मित्र, अरविन्द लवकरे आदि लेखक सामने आये।

5. फिल्मी पत्रकारिता– 'सामान्यतः चलचित्र का उपयोग मनोरंजन के लिए किया जाता है। इसकी आवश्यकता की अनुभूति तब होती है जब व्यक्ति थक जाता है, अवकाश के समय कुछ मनोरंजन चाहता है। चलचित्र उसके अवधान को आकर्षित करता है, यही चलायमान चित्र अपने कथानक में द्रष्टा को समेट लेता है। वस्तुतः द्रष्टा तन– मन से चित्र–पट में अपने को खो देता है। जो दृश्य या संवाद चलचित्र में दिखाई या सुनाई देता है, वे उस पर गहरा प्रभाव डालते है यह प्रभाव कभी क्षणिक होता है। कभी– कभी इसका प्रभाव स्थायी रूप से पड़ता है। मानव मन पर गहरा प्रभाव डालने की क्षमता के कारण चलचित्र जन–संचार का सर्वाधिक महत्वपूर्ण माध्यम है।

चलचित्र में विज्ञान की शक्ति और कला का सौन्दर्य है जो मस्तिष्क को खाद्य देती है और हृदय को आन्दोलित करती है। चित्रपट अभिव्यक्ति का सर्वाधिक प्रभावशाली माध्यम है, जो किसी घटना या विचार को मनोरम ढंग से प्रस्तुत करता है। राष्ट्रीय एकता, अछूतोद्धार, नारी– जागरण, अन्याय, शोषण, भाषावाद, क्षेत्रवाद, जातिवाद, सम्प्रदायवाद जैसे राष्ट्रीय हित के प्रश्नों पर जन–जन की चेतना को जागृत करने वाला माध्यम फिल्म ही है।' वर्तमान समय में हमारी इंडस्ट्री भले ही दुनियाभर में अपनी पहचान स्थापित कर चुकी हो परन्तु फिल्मी पत्रकारिता अभी तक चटपटी, मसालेदार खबरों एवं गॉसिप के अतिरिक्त और कुछ नहीं है।

हिन्दी में फिल्म पत्रकारिता की शुरूआत निर्माण के करीब बीस साल बाद हुई। सन् 1931 में जब बम्बई में आलमआरा में मूक कलाकारों ने बोलना शुरू किया तो लोग चौंक– उठे और लोगों पर फिल्म का जादू– चढ़ गया इसके कुछ समय बाद ही कुछ जागरुक लोगों ने सन् 1932 में 'रंगभूमि' का प्रकाशन करके फिल्मी पत्रकारिता की शुरूआत की। इस पत्रिका के प्रथम सम्पादक श्री लेखराम थे। कुछ साल बाद ही इसका प्रकाशन रुक गया, मगर सन् 1941 में धर्मपाल गुप्ता ने इसका प्रकाशन फिर शुरू किया। सन् 1941 से लेकर आज तक 'रंगभूमि' नियमित प्रकाशति हो रही है। सन् 1932 में ही दिल्ली से ही 'नव चित्रपट' का प्रकाशन प्रांरभ हुआ, मगर उसकी बाद में अधिक जानकारी नही मिलती। रंगभूमि के बराबर टक्कर देने वाली पत्रिका 'चित्रपट' का प्रकाश सन् 1936 में दिल्ली में ऋषभंद जैन के संपादन में हुआ। स्वतंत्रता के बाद सन् 1958 में उर्दू फिल्म पत्रिका 'शमा' ने हिन्दी में 'सुषमा' पत्रिका निकाली। हालांकि यह बाद में हिन्दी में प्रकाशित होने लगी, मगर उसका संपूर्ण कलेवर 'फिल्म' जैसा ही रह गया है।

7. रेडियो पत्रकारिता– रेडियो को हम ध्वनि और शब्द के सामंजस्य का सर्वोत्तम साधन मान सकते है, रेडियो हमारी अभिव्यक्ति का एक आधुनिक रूप है जिसमें ध्वनि ही शब्द ही शक्ति है और शब्द का अर्थ है। रेडियो स्वास्थ्य, शिक्षा, कृषि, पर्यावरण, प्रबन्धन के क्षेत्रों में सूचनाओं के त्वरित प्रसारण द्वारा मानव जीवन में गुणात्मक परिवर्तन का आधार बन चुका है। रेडियो के बारे में कुछ विद्वानों द्वारा इस प्रकार के विचार व्यक्त किये हैं– 'रेडिया बिना कागज और बिना दूरी का समाचार है।''–लेनिन; 'यह तो एक अद्भुत चमत्कार है।' – महात्मा गाँधी।

ऐसा अद्भुत चमत्कार रेडियों, समाचार पत्रों के अस्तित्व को खतरे में डाल दिया था, उसका आविष्कार इतालवी इलेक्ट्रिकल इंजीनियर मारकोनी ने सन् 1895 में किया। प्रारम्भ में पत्र सम्पादकों ने हर तरह से रेडियो की उपेक्षा की, लेकिन इस आविष्कार के बाद यह भ्रम दूर हो गया जब पत्र–पाठकों की संख्या घटने के बजाय बढ़ गई। हालांकि टीवी के आविष्कार के बाद रेडियो पर भी वही खतरा मंडराने लगा लेकिन यह भ्रम भी कुछ दिन ही रहा क्योंकि टीवी के लिए प्रयुक्त इलेक्ट्रोनिक्स तरंगों द्वारा रेडियो का प्रसारण दूर– दराज के क्षेत्रों तक सुगम हो गया।

भारत में रेडियो प्रसारण की शुरूआत 23 जुलाई सन् 1927 को हुई थी। इसमें निरंतर प्रयोजनशीलता जारी रही और यह वर्तमान युग में क्रांतिकारी स्वरूप में उभरकर एफ. एम. के रूप में अस्तित्व में आया है। कला, साहित्य, संस्कृति को हर व्यक्ति तक पहुँचाने में इसने अपनी महत्वपूर्ण भूमिका अदा की हैं। बड़े गुलाम अली खाँ, पं. रविशंकर, गिरिजादेवी, बिस्मिल्लाह खाँ, मित्र बंधु जैसे संगीतज्ञ, सुमित्रानंदन पंत, फिराक गोरखपुरी इलाचन्द्र जोशी, भगवतीचरण वर्मा, अज्ञेय, अश्क, मजाज, पं. नरेन्द्र शर्मा जैसे साहित्यकारों ने आकाशवाणी को गौरवान्वित किया।

रेडियो पत्रकारिता मुद्रित पत्रकारिता से पृथक है। एक में समय –सीमा का महत्व है जबकि दूसरे में स्थान की

उपलब्धता का दस मिनटों में प्रसारित समाचार बुलेटिन में अधिक से अधिक समाचार देना श्रोताओं की स्मरण शक्ति को चुनौती देना है। रेडियो पत्रकारों को एक ही साथ संवाददाता, संवाद लेखक और समाचार–सम्पादक के रूप में अपनी सशक्त भूमिका का निर्वहन करना पड़ता हैं। देश–विदेश के समाचारों के ढेर से सम्पादक को समाचार की विश्वसनीयता व समाचारों का चयन करना पड़ता है। समाचार–चयन के समय उसे समाचार की विश्वसनीयता समाचार की नवीनता का ज्ञान होना चाहिए। तथ्यपूर्ण लोक मंगलकारी सूचनाएँ ही रेडियो सम्पादकों के लिए वरण योग्य होती है। वे सनसनीखेज समाचारों से दूर रहते हैं। सुरुचिपूर्ण संवाद ही रेडियो समाचार–बुलेटिन का श्रृंगार होता है।

शीर्ष पंक्तियों को ' हेडलाइन्स' या 'मुख्य समाचार' कहा जाता है। इनमें समाचारों का निचोड़ होता है। शीर्ष पंक्ति वही लिख सकता है जो अत्यन्त मेधावी कुशल सम्पादक हो। उसकी विद्वता सीमित संक्षिप्त सार–लेखन में निहित होती है, क्योकि 'मितं च सारं च वचो हि वाग्मिता'। अनुभव अभ्यास और प्रशिक्षण के बल पर ही तीव्र बुद्धि वाले पत्रकार अत्यन्त चुस्त–दुरूस्त रूप में रेडियो हेतु समाचार सार प्रस्तुत कर सकते हैं। रेडियो पत्रकारिता के प्रमुख संसाधन निम्नलिखित है–1. आकाशवाणी 2. एफ.एम. रेडियो तरंग 3. बी.बी.सी.

8. ग्रामीण पत्रकारिता–हमारा देश गाँवों का देश है। आज भी उन गाँवों में मूलभूत सुविधाओं का अभाव है, जिसकी वजह है संचार की रिक्तता। दूद–दराज के गाँवों में नई चेतना और वैज्ञानिक विकास के स्वरों को केवल पत्रों के द्वारा ही पहुँचाया जाता था तथा कहीं–कहीं तो आज भी यही स्थिति है। उसी संदर्भ में प्रसिद्ध पत्रकार गणेशशंकर विद्यार्थी का कथन उचित प्रतीत होता है। ''राष्ट्र महलों में नही रहता, प्रकृत राष्ट्र के निवास–स्थल वे अगणित झोंपड़े है जो गाँवों और पुरवों में फैले हुए खुले आकाश के देदीप्यमान सूर्य और शीतल चन्द्र और तारागण से प्रकृति का संदेश लेते है। इसीलिए राष्ट्र का मंगल और उसकी जड़ उस समय तक मजबूत नहीं हो सकती जब तक कि अगणित लहलहाते पौधों की जड़ों में जीवन का जल नहीं सींचा जाता।''

परम्परागत लोक कला, लोक संस्कृति के प्रचार, कुटीर उद्योग, ग्रामीण स्वास्थ्य, हरित और श्वेत क्रांति द्वारा गाँव के समग्र विकास हेतु समर्पित पत्रकारिता को ग्रामीण कहना समीचीन होगा। कुछ लोगों ने 'कृषि पत्रकारिता' को इसका पर्याय माना है। जबकि ऐसा उचित नहीं है। प्रवीण दीक्षित जी द्वारा लिखित 'जनमाध्यम और पत्रकारिता' में यह स्पष्टतः देखा जा सकता है–''हमारी अपनी मान्यता के अनुसार जो पत्रकार नियमित रूप से ग्रामीण समाज की सम–सामयिक आवश्यकता के अनुसार नियमित रूप से समाचार पत्र–पत्रिकाओं या रेडियो–टेलीविजन आदि जन–माध्यमों में अपना योगदान करते है, उन्हें हम ग्रामीण पत्रकार और उनके ऐसे कृतित्व की साकारता या सक्रियता को ग्रामीण पत्रकारिता की संज्ञा से अभिहित कर सकते हैं। जो ग्रामीण समाज की आवश्यकताओं के अनुरूप न होकर केवल कृषकों के हितों तथा लाभों तक सीमित होती है। उसे हम केवल कृषि पत्रकारिता कह सकते हैं।''

ग्रामीण इलाकों में बोलचाल की भाषा हिंदी है, क्षेत्रीय भाषा है और स्थानीय बोली है। ठेठ गाँव में अंग्रेजी पढ़ने और समझने वाले लोगों की संख्या तो न के बराबर ही है। इस कारण अंग्रेजी के राष्ट्रीय अखबार वहाँ बहुत कम बिकते हैं। शहरों में अंग्रेजी अखबारों के पाठक अधिक है, इसलिए वे वहाँ अधिक पढ़े जाते हैं। अंग्रेजी अखबार भी इसीलिए शहरी इलाकों की खबरे अधिक छापते हैं क्योंकि प्रसार बनाए रखने के लिए इस इलाके में खबर छापना उनकी मजबूरी है। इसीलिए ग्रामीण समाचारों और वहाँ के पत्रकारों की उपेक्षा होती है। राजस्थान में राजस्थान पत्रिका, दैनिक भास्कर, दैनिक नवज्योति आदि समाचार पत्रों ने ग्रामीण पत्रकारिता के क्षेत्र में वहाँ की स्थानीय बोली और हिन्दी भाषा को खासा महत्व दिया। ग्रामीण क्षेत्र से सम्बन्धित लोक–सांस्कृतिक जीवन एवं दैनिक घटनाओं का विवरण तथा उससे सम्बन्धित योजनाओं के बारे में इन पत्र–पत्रिकाओं ने गाँवों में जागृति व चेतना का कार्य किया।

9. समाचार पत्रकारिता – समाचार पत्रकारिता से आशय है कि यह वह पत्रकारिता है जिसके माध्यम से हम देश–दुनिया में घटित घटनाओं, परिवर्तनों तथा नवीनीकरणों से हमें अवगत कराती है। समाचार शब्द का अर्थ ही सम् + आचार से निकलता है जिसका शाब्दिक अर्थ है 'समान व्यवहार'। यानि कि निष्पक्ष रूप से घटनााओं का यथार्थ प्रस्तुतीकरण करने वाला। इसी संदर्भ में समाचार के लिए गाँधीजी के कथन भी पठनीय हैं–''समाचार पत्र का पहला उद्देश्य जनता की इच्छाओं, विचारों को समझना और इन्हें व्यक्त करना है। दूसरा उद्देश्य जनता में वांछनीय भावनाओं को जाग्रत करना है। तीसरा सार्वजनिक दोषों को निर्भयतापूर्वक प्रकट करना है।''

वर्ममान समय में समाचार पत्र दैनिक जीवन का प्रमुख अंग हो गया है। व्यक्ति सुबह उठते ही देश–दुनिया का समाचार जानना चाहता है, यहाँ तक कि कई लोगों की दिनचर्या उसी से निश्चित होती है, उनके कार्य का निर्धारण भी रहता है, विशेष रूप से बाजार एवं व्यवसाय से सम्बन्धित व्यक्ति विशेष का। यह बुद्धिजीवी पाठकों के लिए एक ऐसा दर्पण है जिसकी सहायता से वे विश्व की गतिविधि, स्वराष्ट्र के उत्थान–पतन तथा क्षेत्र–विशेष की ज्वलंत समस्याओं से सुपरिचित होते है। समाज का वास्तविक तापमापी (थर्मामीटर) तो समाचार पत्र ही है जिसमें सामाजिक वातारण का तापमान परिलक्षित होता है। यहाँ तक कि पत्रों को दूरबीन कहा जाए तो अतिशयोक्ति नहीं होगी क्योंकि वे भविष्य में होने वाली बहुत दूर–दूर की घटनाओं का आभास दे देते है। समाचार पत्र की महता निम्नलिखित पंक्तियों से परिलक्षित होती है–''ज्यों पारस लगि होत है, लोहा कनक समान। त्यों पत्रन के पठन ते, मूर्ख होत मतिमान।।''

समाचार पत्रकारिता समाज का अन्तःकरण भी है और उसकी दैनिक घटनाओं का इतिहास भी। समाचार पत्रकारिता के मुख्य तत्व नूतनता, सत्यता, सामीप्य, सुरूचिपूर्णता, वैयक्तिकता, इत्यादि हैं। समाचार पत्र–पत्रिकाओं का प्रकाशन दैनिक, द्विदैनिक, अर्धसाप्ताहिक, पाक्षिक, मासिक, द्विमासिक, त्रैमासिक, अर्द्धवार्षिक आदि अवधियों में होता है। समाचारों से सम्बन्धित प्रमुख हिन्दी पत्र–पत्रिकाएँ इस प्रकार है –राजस्थान पत्रिका, दैनिक नवज्योति, नई दुनिया, हिन्दुस्तान, नव भारत टाइम्स, जलते दीप, दैनिक भास्कर, जागरण, विश्वमित्र, पंजाब केसरी, आज, अमर उजाला, सन्मार्ग, देशबंधु, हमारा संदेश, प्रदीप, दैनिक हिन्दी मिलाप, नवजीवन, स्वतंत्र

भास्कर आदि।

निष्कर्ष–

इस प्रकार पत्रकारिता के विविध आयामों को उपरोक्त क्रम में अध्ययन करने पर हम निष्कर्षतः यह समझ सकते हैं कि पत्रकारिता का स्वरूप काफी व्यापक है। पत्रकारिता की पहुँच जीवन के प्रत्येक क्षेत्र पर है, जिसको हम विविध रूप में पहचानते हैं। आधुनिक पत्रकारिता के इस तकनीकी युग में मीडिया का आयाम निरंतर प्रसारित हो रहा है। उसके तरीके बदल रहे हैं। जैसे–जैसे मानव तकनीकी की तरफ बढ़ रहा है, उसी प्रकार पत्रकारिता का दायरा भी बढ़ता जा रहा है और वह काफी पैनापन लिए नजर आ रही है जो कि समाज एवं देश के लिए शुभदायी है। पत्रकारिता का यह स्तर अभिशाप न बनने पाये ऐसे प्रयासों की हमें आवश्यकता है। हिन्दी पत्रकारिता में हो रही निरंतर वृद्धि आमजन के लिए वरदान साबित होगी, यह अपेक्षणीय है।

संदर्भ ग्रन्थ सूची–

- ओझा, गौरीशंकर हीराचंद, राजपूताने का इतिहास, राजस्थानी ग्रंथागार, जोधपुर, 2005
- कालेलकर, काकासाहब, जमनालाल बजाज की डायरी, जमनालाल बजाज सेवा ट्रस्ट, वर्धा, 1966
- गुप्ता, डॉ. मोहनलाल, कर्मयोगी राजस्थानी, शुभदा प्रकाशन, जयपुर, 2009
- चतुर्वेदी, जगदीश्वर, सूचना समाज, अनामिका पब्लिशर्स एंड डिस्ट्रीब्यूटर्स, भोपाल, 2002
- जैन, महावीर प्रसाद, अलवर की जागृति का इतिहास, अखिल भारतीय स्वतंत्रता सेनानी, अलवर, 2002
- टंडन, डॉ. प्रताप नारायण, वृहद् हिन्दी पत्रकारिता कोश, साहित्य शिल्पी प्रकाशन, लखनऊ, 1986
- देसाई, ए.आर., भारतीय राष्ट्रवाद की सामाजिक पृष्ठभूमि, मैकमिलन इण्डिया लिमिटेड, नई दिल्ली, 1976
- पतंजलि, डॉ. प्रेमचन्द, मीडिया के पचास वर्ष, राध पब्लिकेशन्स समाचार–पत्रों की दुनिया, देवेन्द्र उपाध्याय, मौलिक साहित्य प्रकाशन, संस्करण–1998
- पचौरी, सुधीश, जनसंचार माध्यम भाषा और साहित्य, नटराज प्रकाशन, 2000